17 जून 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 6 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (द्वितीय), 2013 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

47वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

● देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 700-800 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में लाभान्वित ●प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित ● शिविर में लगभग 48 विद्वानों द्वारा धर्मप्रभावना ● बालबोध प्रशिक्षण में 164 एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 80 विद्यार्थी सम्मिलित हुये ● शिविर में लगभग 70 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं लगभग 21000 घण्टों के सी.डी. व डी.वी.डी. प्रवचन घर-घर पहुँचे ।

देवलाली-नासिक (महा.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा आयोजित 47 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर दिनाँक 21 मई से 7 जून, 2013 तक अनेक उपलब्धियों के साथ सानंद सम्पन्न हुआ ।

शिविर उद्घाटन एवं युवा फैडरेशन के अधिवेशन के विस्तृत समाचार जून (प्रथम) अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं ।

प्रात:कालीन प्रवचन – प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के ग्रन्थाधिराज समयसार के मोक्ष अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये ।

रात्रिकालीन प्रवचन – प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के 'प्रवचनसार के 47 नय' के आधार से हुए द्वितीय प्रवचन के पूर्व प्रतिदिन क्रमश: ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, पण्डित रीतेशजी डडूका, पण्डित अनिलजी इन्दौर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना के विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त शांताबेन के जीवन-परिचय की सी.डी. भी दिखाई गई ।

दोपहर की व्याख्यानमाला में – पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना, पण्डित विजयजी बोरालकर, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, पण्डित महावीरजी मांगुलकर, पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, पण्डित राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा एवं पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए ।

प्रशिक्षण कक्षायें – बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा व पण्डित निखलेशजी दलपतपुर ने एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित कोमलचंदजी टडा व पण्डित निखलेशजी ने ली । प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व पण्डित धर्मेन्द्रजी कोटा ने एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित धर्मेन्द्रजी कोटा, पण्डित कोमलचन्दजी टडा एवं पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा ली गई ।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, पण्डित महावीरजी मांगुलकर, पण्डित रीतेशजी डडूका, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित विजयजी बोरालकर, पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा, पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, विदुषी कमलाजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई, विदुषी रंजनाजी बंसल अमलाई, विदुषी स्वर्णलता जैन नागपुर, डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा, विदुषी लताबेन देवलाली का सहयोग प्राप्त हुआ ।

प्रशिक्षण कक्षाओं का संचालन पण्डित कमलचंदजी, पण्डित कोमलचंदजी के निर्देशन में पण्डित नरेन्द्रजी, पण्डित धर्मेन्द्रजी, पण्डित निखलेशजी द्वारा संपन्न हुआ ।

प्रौढ़ कक्षायें – निमित्त-उपादान की कक्षा ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, नयचक्र (नैगमादि सप्तनय) की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं गुणस्थान विवेचन व दशकरण विषय की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन जयपुर ने ली । प्रात:काल की प्रौढकक्षा पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित अनिलजी इंजी. पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा द्वारा ली गई ।

बालवर्ग हेतु प्रतिदिन तीन समय कक्षाओं का आयोजन किया गया । इन कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों द्वारा किया गया, जिसमें 100-150 बच्चे सम्मिलित हुये ।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय –

श्रुतपंचमी के अवसर पर –

जैन अध्यात्म

(गतांक से आगे...)

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

मोक्ष महल की प्रथम सीढ़ी के रूप में जो सम्यग्दर्शन है, उसकी उत्पत्ति जैन अध्यात्म के अध्ययन बिना संभव ही नहीं है। अध्यात्म रसिक पण्डित श्री दौलतरामजी सम्यग्दर्शन की महिमा में कहते हैं –

मोक्षमहल की प्रथम सीढ़ी, या बिन ज्ञान चरित्रा।
सम्यक्ता न लहे सो दर्शन धारो भव्य पवित्रा।।

जिनागम में सम्यग्दर्शन की चार परिभाषायें दी हैं – १. तीन मूढ़ता रहित आठ अंग सहित सच्चे देव–शास्त्र–गुरु का श्रद्धान ही सम्यग्दर्शन हैं। – आ. समन्तभद्र : रत्नकरण्ड श्रावकाचार

२. ''तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यग्दर्शनं'' सात तत्त्वों के श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहते हैं। – आ. उमा स्वामी तत्त्वार्थसूत्र

३. छहढाला में परद्रव्यों से भिन्न आत्मा के श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहा है तथा –

४. आ. कुन्दकुन्द के समयसार में स्व–पर भेद विज्ञान को सम्यग्दर्शन कहा गया है।

जीव का वास्तविक लक्षण तो चैतनामात्र है। अस्ति से कहें तो वह ज्ञानदर्शनमय है और नास्ति से कहें तो वह अरस, अरूप, अगंध और अस्पर्शी है तथा पुद्गल के आकार रूप नहीं होता, अतः उसे निराकार व अलिंगग्रहण कहा जाता है।

आत्मा के ऐसे स्वभाव को न जाननेवाले, पर के संयोग कारण आत्मा से भिन्न परपदार्थों व परभावों को ही आत्मा मानते हैं। इस कारण कोई राग–द्वेष को, कोई कर्मफल को, कोई शरीर को और कोई अध्यवसानादि भावों को ही जीव मानते हैं, जबकि वस्तुतः ये सब जीव नहीं हैं; क्योंकि ये सब तो कर्मरूप पुद्गलद्रव्य के निमित्त से होनेवाले या तो संयोगीभाव हैं या संयोग हैं, अतः अजीव हैं।

ज्ञानी इन सब आगंतुक भावों से भेदज्ञान करके ऐसा मानता है कि ''मैं एक हूँ, मैं शुद्ध हूँ, अरूपी हूँ, ज्ञान–दर्शनमय हूँ, इसके सिवाय अन्य द्रव्य किंचित्मात्र भी मेरे नहीं हैं।'' ऐसा समयसार गाथा ४९ में कहा है। इसी दृष्टि से समयसार गाथा ६ एवं ७ भी महत्त्वपूर्ण हैं, जिनमें क्रमशः स्वसमय–परसमय एवं प्रमत्त–अप्रमत्त के संदर्भ में पर व पर्यायों से भेदज्ञान कराके शुद्धात्मस्वरूप का विशद स्पष्टीकरण किया गया है।

समयसार के कर्ता–कर्म अधिकार में वस्तुस्वातंत्र्य या छहों द्रव्यों के स्वतंत्र परिणमन का निरूपण है, जो प्रकारान्तर से परद्रव्य के अकर्तृत्व का ही निरूपण है। यह अकर्तावाद का सिद्धान्त आगमसम्मत, युक्तियों संगत एवं सिद्धान्तशास्त्रों की पारिभाषिक शब्दावलियों द्वारा स्थापित तो है ही, पर व्यावहारिक लौकिक जीवन में भी उसकी उपयोगिता असंदिग्ध है।

आगम के दबाव और युक्तियों की मार से सिद्धान्ततः स्वीकार कर लेने पर भी अपने दैनिक जीवन की छोटी–मोटी पारिवारिक घटनाओं के सन्दर्भ में उन सिद्धान्तों के प्रयोगों द्वारा आत्मिक शान्ति और निष्कषाय भाव रखने की बात जगत के गले आसानी से नहीं उतरती, उसके अन्तर्मन को सहज स्वीकृत नहीं होती, जबकि हमारे धार्मिक सिद्धान्तों की सच्ची प्रयोगशाला तो हमारे जीवन का कार्यक्षेत्र ही है।

क्या अकर्तावाद जैसे संजीवनी सिद्धान्त केवल शास्त्रों की शोभा बढ़ाने या बौद्धिक व्यायाम करने के लिए ही हैं? अपने व्यावहारिक जीवन में प्रामाणिकता, नैतिकता एवं पवित्रता प्राप्त करने में इनकी कुछ भी भूमिका – उपयोगिता नहीं है?

जरा सोचो तो, अकर्तृत्व के सिद्धान्त के आधार पर जब हमारी श्रद्धा ऐसी हो जाती है कि कोई भी जीव किसी अन्य जीव का भला या बुरा कुछ भी नहीं कर ही सकता, तो फिर हमारे मन में अकारण ही किसी के प्रति राग–द्वेष–मोहभाव क्यों होंगे?

यहाँ यह प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि अकर्तृत्व की सच्ची श्रद्धा वाले ज्ञानियों के भी क्रोधादि भाव एवं इष्टानिष्ट की भावना देखी जाती है तथा उनके मन में दूसरों का भला–बुरा या बिगाड़–सुधार करने की भावना भी देखी जाती है – इसका क्या कारण है?

उत्तर यह है कि 'यद्यपि सम्यग्दृष्टि की श्रद्धा सिद्धों जैसी पूर्ण निर्मल होती है, तथापि वह चारित्रमोह कर्मोदय के निमित्त से एवं स्वयं के पुरुषार्थ की कमी के कारण दूसरों पर कषाय करता हुआ भी देखा जा सकता है; पर सम्यग्दृष्टि उसे अपनी कमजोरी मानता है। उस समय भी उसकी श्रद्धा में तो यही भाव है कि पर ने मेरा कुछ भी बिगाड़–सुधार नहीं किया है। अतः उसे उसमें अनन्त राग–द्वेष (अनन्तानुबंधी राग–द्वेष) नहीं होता। उत्पन्न हुई कषाय को यथाशक्ति कृश करने का पुरुषार्थ निरन्तर चालू रहता है। अतः इस अकर्तावाद के सिद्धान्त को धर्म का मूल आधार या धर्म का प्राण भी कहा जाय तो भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

वस्तुतः पर में अकर्तृत्व की यथार्थ श्रद्धा रखनेवाले का तो जीवन ही बदल जाता है। वह अन्दर ही अन्दर कितना सुखी, शान्त, निरभिमानी, निर्लोभी और निराकुल हो जाता है; अज्ञानी तो उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता।

समयसार के अकर्तावाद का तात्पर्य यह है कि जो प्राणी अपने को अनादि से परद्रव्य का कर्ता मानकर राग–द्वेष–मोह भाव से

कर्मबन्धन में पड़कर संसार में परिभ्रमण कर रहा है, वह अपनी इस मूल भूल को सुधारें और अकर्तृत्व की श्रद्धा के बल से राग–द्वेष का अभाव कर वीतरागता प्रकट करें; क्योंकि वीतरागता हुए बिना पूर्णता, पवित्रता व सर्वज्ञता की प्राप्ति संभव नहीं है। एतदर्थ अकर्तावाद को समझना अति आवश्यक है।

वस्तुतः कर्ता–कर्म सम्बन्ध दो द्रव्यों में होता ही नहीं है, एक ही द्रव्य में होता है। इस विषय में आचार्य अमृतचन्द्र का निम्नांकित पद्य द्रष्टव्य है–

''यः परिणमित स कर्ता, यः परिणामो भवेत्तु तत्कर्म।
या परिणति क्रिया सा, त्रयमपि भिन्नं न वस्तुतया।।५१।।

जो परिणमित होता है, वह कर्ता है, जो परिणाम होता है उसे कर्म कहते हैं और जो परिणति है वह क्रिया कहलाती है, वास्तव में तीनों भिन्न–भिन्न नहीं हैं।''

इस कलश से स्पष्ट है कि जीव और पुद्गल में कर्ता–कर्म सम्बन्ध नहीं है। वस्तुतः कर्तृ–कर्म सम्बन्ध वहीं होता है, जहाँ व्याप्य–व्यापक भाव या उपादान–उपादेय भाव होता है। जो वस्तु कार्यरूप परिणत होती है वह व्यापक है तथा जो कार्य होता है वह व्याप्य है।

यदि आत्मा परद्रव्यों को करे तो नियम से वह उनके साथ तन्मय हो जाये, पर तन्मय नहीं होता, इसलिए वह उनका कर्ता नहीं है। वीतरागता प्राप्त करने के लिए अकेला अकर्ता होना ही जरूरी नहीं है, बल्कि अपने को पर का अकर्ता जानना, मानना और तद्रूप आचरण करना भी जरूरी है। एक–दूसरे के अकर्ता तो सब जीव हैं ही, पर भूल से अज्ञानियों ने अपने को पर का कर्ता मान रखा है, इस कारण उनकी अनन्त आकुलता और क्रोधादि कषायें कम नहीं होतीं, अन्यथा इस अकर्तृत्व सिद्धान्त की श्रद्धा वाले व्यक्ति के विकल्पों का तो स्वरूप ही कुछ इसप्रकार का होता है कि उसे समय–समय पर प्रतिकूल परिस्थितिजन्य अपनी आकुलता कम करने के लिए वस्तु के स्वतंत्र परिणमन पर एवं उस परिणमन में अपनी अकिंचित्करता के स्वरूप के आधार पर ऐसे निम्नांकित विचार आते हैं कि जिनसे उसकी आकुलता सहज ही कम हो जाती है।

(१) सोचता है कि – यदि मैं अपनी इच्छानुसार शरीर में परिणमा सकता तो जब भी अपशकुन की प्रतीक मेरी बाईं आख फड़कती है, उसे बन्द करके शुभ शकुन की प्रतीक दायीं आँख क्यों नहीं फड़का लेता?

(२) यदि मैं अपने प्रयत्नों से शरीर को स्वस्थ रख सकता हूँ तो प्रयत्नों के बावजूद भी यह अस्वस्थ क्यों हो जाता है? जब किसी को कैंसर, कोढ़ एवं दमा–श्वांस जैसे प्राणघातक भयंकर दुःखद रोग हो जाते हैं तो वह उन्हें अपने प्रयत्नों से तत्काल ठीक क्यों नहीं कर लेता?

(३) यदि मैं किसी का भला कर सकता होता तो सबसे पहले अपने कुटुम्ब का भला क्यों न कर लेता? फिर मेरे ही परिजन–पुरजन दुःखी क्यों रहते? मैंने अपनी शक्ति–अनुसार उनका भला चाहने व करने में कसर भी कहाँ छोड़ी? पर मेरी इच्छानुसार किसी का कुछ भी तो नहीं कर सका।

(४) इसीप्रकार, यदि कोई किसी का बुरा या अनिष्ट कर सकता होता तो आज संभवतः यह दुनिया ही इस रूप में न होती, सभी कुछ नष्ट–भ्रष्ट हो गया होता; क्योंकि दुनिया तो राग–द्वेष का ही दूसरा नाम है, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसका कोई मित्र या शत्रु न हो; पर आज जगत यथावत् चल रहा है। इससे स्पष्ट है कि कोई किसी के भले–बुरे, जीवन–मरण व सुख–दुःख का कर्ता–हर्ता नहीं है।

लोक में सभी कार्य स्वतः अपने–अपने षट्कारकों से ही सम्पन्न होते हैं। उनका कर्ता–धर्ता मैं नहीं हूँ। ऐसी श्रद्धा से ज्ञानी पर के कर्तृत्व के भार से निर्भार होकर अपने ज्ञायकस्वभाव का आश्रय लेता है। यही आत्मानुभूति का सहज उपाय है।

(क्रमशः)

छात्र प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.) की ग्रीष्मकालीन परीक्षा अगस्त 2013 में होने जा रही है। संबंधित सभी परीक्षा केन्द्रों को खाली प्रवेश फार्म डाक से भेजे जा चुके हैं; अतः शीघ्रातिशीघ्र छात्र प्रवेश फार्म भरकर भिजवा देवें।

कदाचित खाली छात्र प्रवेश फार्म डाक की गड़बड़ी से उपलब्ध नहीं हुए हों तो परीक्षा बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क कर तत्काल मंगा लेवें।

– ओ.पी. आचार्य, प्रबंधक–परीक्षा विभाग

48वाँ शिक्षण प्रशिक्षण शिविर दिल्ली में

देवलाली में प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिल्ली से पधारे लगभग 15 साधर्मियों ने आगामी शिक्षण प्रशिक्षण शिविर दिनांक 18 मई 4 जून 2014 तक दिल्ली में आयोजित करने की भावना व्यक्त की, जिसे स्वीकार कर लिया गया। दिल्ली से पधारे श्री वज्रसेनजी जैन, श्री जे.के. जैन, श्री मंगलसेन जैन, श्री प्रमोदजी जैन, विवेकजी जैन आदि महानुभावों ने दिनांक 4 जून को प्रातः डॉ. भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त सभी साधर्मियों को आगामी प्रशिक्षण शिविर में दिल्ली पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण दिया।

इस अवसर पर प्रशिक्षण शिविर की ध्वजा श्री कान्तिभाई मोटाणी मुम्बई द्वारा दिल्ली के महानुभावों को सौंपी गई।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें– वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

बाल संस्कार शिक्षण शिविर संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर मालवीय नगर सेक्टर–7 में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री नथमलजी झांझरी परिवार द्वारा 14वाँ बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 1 से 10 जून 2013 तक किया गया।

शिविर में पण्डित मनीषजी कहान द्वारा णमोकार महामंत्र, मंगलाचरण, जिनपूजन रहस्य आदि जिनागम के विविध विषयों पर सरल भाषा में प्रवचन हुये एवं प्रतिदिन प्रवचन आधारित एक वर्कशीट श्रोताओं को दी गई और जिन्हें श्रोताओं द्वारा उत्साहपूर्वक हल किया गया। इस अवसर पर पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा बच्चों की कक्षा ली गई।

शिविर में सम्मिलित बच्चों की परीक्षा दिनांक 9 जून को ली गई एवं 10 जून को परीक्षा परिणाम घोषित कर पुन: पुरस्कृत किया गया।

शिविर में पण्डित विमलकुमारजी बनेठा, राजकुमारजी कासलीवाल, श्री सुमतिचंदजी, श्री गिरीशजी, श्री सुमेरजी, श्री सुरेशजी, श्री पद्मचंदजी इत्यादि महानुभावों का विशेष सहयोग रहा।

(2) जयपुर (राज.) : यहाँ मधुवन कॉलोनी में दिगम्बर जैन महासमिति जयपुर द्वारा दिनांक 20 से 30 मई 2013 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित संजयजी सेठी जयपुर एवं पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा बच्चों की कक्षा ली गई, जिसमें संस्कार सरोवर भाग–1, 2, 3 का पठन–पाठन किया गया।

शिविर में लगभग 40 बच्चों ने भाग लिया, जिनकी परीक्षा दिनांक 30 मई को ली गई।

शोक समाचार

1. फिरोजाबाद (उ.प्र.) निवासी श्रीमती सरोजलता जैन का दिनांक 29 मई को 73 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थीं। आप वीतराग–विज्ञान पाठशाला का संचालन भी करती थीं। शिक्षण शिविरों में पधारकर भी लाभ लिया करती थीं। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक अनन्तवीर जैन की दादीजी थीं।

2. बालापुर–आखाड़ा (महा.) निवासी श्रीमती लक्ष्मीबाई विट्ठलराव कंधारकर (जैन) का दिनांक 10 मई को अत्यन्त शांतपरिपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान हेतु 251–251/– रुपये की राशि प्राप्त हुई।

3. दमोह (म.प्र.) निवासी श्रीमती श्रीरानीजी जैन का दिनांक 17 मई को 76 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान हेतु 101–101/– रुपये प्राप्त हुये।

4. कोलारस (म.प्र.) निवासी श्री हुकमचन्दजी जैन का दिनांक 28 मई को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक सुरेशजी शास्त्री के पिताजी थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 200/– रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का –

महाराष्ट्र प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न

देवलाली (महा.) : यहाँ दिनाँक १ जून को पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का महाराष्ट्र प्रान्तीय अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। विद्वत्वर्ग में तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. अभिनन्दनजी खनियांधाना, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' आदि मंचासीन थे। कार्यकारिणी सदस्यों के अन्तर्गत डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री तथा महाराष्ट्र प्रान्तीय कार्यकारिणी सदस्यों में पण्डित जिनचंदजी शास्त्री आलमान, पण्डित अनंतजी शास्त्री विश्वंभर आदि महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, नेमिनाथजी शास्त्री, निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, रितेशजी शास्त्री डडूका आदि स्नातक विद्वानों का उद्बोधन हुआ।

विद्वत्गणों के मार्गदर्शन हेतु डॉ. भारिल्ल एवं ब्र. यशपालजी ने अपना उद्बोधन दिया। अध्यक्षीय भाषण के अन्तर्गत पण्डित अभयजी द्वारा अपना वक्तव्य दिया गया।

मंगलाचरण ब्र. अभिनन्दनजी ने एवं स्वागतभाषण व संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

मुक्त विद्यापीठ के परीक्षार्थी ध्यान दें

प्रथम सेमेस्टर की जून 2013 के अंतिम सप्ताह में विशारद एवं सिद्धान्त विशारद की परीक्षायें होने वाली हैं, कृपया सम्बन्धित परीक्षार्थी समुचित तैयारी में जुट जावें। योग्य प्रश्नपत्र 25 जून 2013 तक भी नहीं मिले तो सम्पर्क कर मंगा लें। **– ओ.पी. आचार्य,** प्रबन्धक **श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए–4, बापूनगर, जयपुर**

हार्दिक आमंत्रण

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में लगने वाला आध्यात्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 4 अगस्त से 13 अगस्त, 2013 तक आयोजित होने जा रहा है। आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

इस शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल क अतिरिक्त अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

कृपया अपने पधारने की पूर्व सूचना अवश्य देवें; ताकि आपके आवास आदि की व्यवस्था समुचित रूप से हो सके।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

सहारनपुर (उ.प्र.) : यहाँ श्री जैन दिगम्बर जैनाचार्य कुन्दकुन्द परमागम मंदिर ट्रस्ट द्वारा दिनांक 18 से 20 मई तक श्री 1008 चौबीस तीर्थंकर तीर्थंकर वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा के प्रवचनों का लाभ मिला।

इस कार्यक्रम में जिनेन्द्र मंगल कलश एवं इन्द्र प्रतिष्ठा शोभायात्रापूर्वक 24 तीर्थंकरों को प्रतिष्ठा मण्डप लाकर मनोहारी वेदी में विराजित किया गया। इन्द्र–इन्द्राणियों द्वारा श्री पंच परमेष्ठी विधान किया गया। दोपहर में विद्वानों के प्रवचन एवं रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति, गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन के बाद बालिकाओं, महिला मण्डल तथा दिगम्बर जैन बालबोध की सभा द्वारा धार्मिक नाटक–जम्बूस्वामी का वैराग्य प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम में मेरठ, खतौली, खेकड़ा, देवबंध, नकुल, मुजफ्फरनगर, देहरादून आदि स्थानों से सैकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि–विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित रमेशजी ज्ञायक इन्दौर एवं पण्डित अशोकजी उज्जैन द्वारा संपन्न कराये गये।

उपकार दिवस एवं शिक्षण शिविर संपन्न

उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ श्री सीमन्धर दिगम्बर जैन मन्दिर की 50वीं वर्षगांठ के पावन अवसर पर दिनांक 5 से 12 मई तक स्वर्ण जयन्ती शिखर उत्सव, शिक्षण शिविर एवं गुरुदेवश्री की जन्मजयन्ती सानन्द संपन्न हुई। इस अवसर पर सीमंधर मण्डल विधान एवं याग मण्डल विधान का भी आयोजन किया गया।

शिविर में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा दोनों समय 'नयचक्र' विषय पर प्रवचन हुये।

अन्तिम दिन गुरुदेवश्री की जन्म जयन्ती श्री स्वप्निलजी जैन अलीगढ के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुई। इस अवसर पर संपूर्ण समाज के विभिन्न ट्रस्टों द्वारा श्री स्वप्निलजी का सम्मान किया गया। ध्वजारोहण श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा ने किया। कार्यक्रम में श्रीमती वीणा बहन राजेन्द्र कुमारजी देहरादून की विशेष उपस्थिति रही।

शिविर में लगभग 230 बच्चों ने धार्मिक संस्कारों को ग्रहण किया। प्रतिदिन रात्रि में पण्डित संजयजी मंगलायतन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संपन्न कराये गये। इस अवसर पर इन्दौर, भोपाल, नागपुर, कोटा, चेन्नई, बेलगाम, महिदपुर, चिड़ावा, सुसनेर सहित अनेक नगरों के मुमुक्षु भाई–बहिनों ने उत्सव व शिविर का लाभ लिया।

समापन के अवसर पर विशाल जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें महिलायें 51 जिनवाणी की वेदी लेकर चल रही थीं।

सीमंधर दिगम्बर जैन मन्दिर ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम का संयोजन जैन युवा फैडरेशन एवं सम्यक तरंग महिला मण्डल ने किया। शिविर व उत्सव में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान द्वारा विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। साथ ही दि.जैन सोशल ग्रुप के पाँचों इकाई महिला परिषद, महासमिति के साथ–साथ नगर के सभी मंदिरों के ट्रस्टों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन एवं पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा संपन्न कराये गये।

– जम्बू जैन धवल

(पृष्ठ 1 का शेष...)

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन – दिनांक 7 जून को प्रात: 8.30 से 9.30 तक पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के प्रवचन के पश्चात् प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न हुआ। अध्यक्ष के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं अन्य विद्वानों में ब्र. यशपालजी जैन, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी, ब्र. हेमचन्दजी, पण्डित अभयजी, श्री सुमनभाई दोशी, पण्डित कोमलचंदजी, पण्डित कमलचंदजी, विदुषी कमला भारिल्ल, विदुषी लताबेन देवलाली एवं सभी प्रशिक्षण अध्यापकगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण वीकेश जैन खड़ैरी ने एवं संचालन आशुतोष जैन आरोन ने किया।

इस अवसर पर वक्ताओं के रूप में अमित बण्डा, प्रज्ज्वल नागपुर, अनेकान्त रहली, संवेग जैन टीकमगढ, सिद्धान्त जबेरा आदि प्रशिक्षणार्थियों ने अपने अनुभव बताये। अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने गांव में जाकर पाठशाला चलाने का संकल्प व्यक्त किया।

तत्पश्चात् यही सभा दीक्षान्त समारोह में परिवर्तित हो गई, जिसमें शिविर की रिपोर्ट बताते हुए पण्डित कमलचंदजी ने बताया कि प्रशिक्षण–शिविर में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, दिल्ली आदि स्थानों से बालबोध प्रशिक्षण में उपस्थित 164 विद्यार्थियों में से 145 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। इनमें से 64 ने विशेष योग्यता, 63 ने प्रथम श्रेणी, 13 ने द्वितीय श्रेणी एवं 1 ने तृतीय श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रवेशिका प्रशिक्षण में उपस्थित 80 विद्यार्थियों में से 73 ने परीक्षा दी। इनमें से 27 ने विशेष योग्यता, 37 ने प्रथम श्रेणी, 3 ने द्वितीय श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की।

अन्त में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का अध्यक्षीय उद्बोधन हुआ एवं सभी अध्यापकों को डॉ. भारिल्ल द्वारा समयसार पर किये गये प्रवचनों की डी.वी.डी. भेंट की गई।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम स्थान विवेक जैन जयपुर, द्वितीय स्थान ऋषभ जैन दिल्ली, तृतीय स्थान राहुल जैन जयपुर व दीक्षा नागपुर ने प्राप्त किया। बालबोध प्रशिक्षण में प्रथम स्थान श्रीमती प्रतिभा जैन उदयपुर, द्वितीय स्थान सुनीता विजय जैन भरतपुर व शाश्वत राजीव जैन भोपाल एवं तृतीय स्थान विकास जैन जयपुर ने प्राप्त किया।

अन्त में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने शिविर की व्यवस्था हेतु देवलाली के सभी ट्रस्टियों, पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया, साथ ही सभी अध्यापकगणों व विद्वत्जनों का भी हार्दिक आभार व्यक्त किया।

आगामी कार्यक्रम...

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने बेलगांव (कर्नाटक) पधारकर प्रवचनों का लाभ प्रदान करने हेतु स्वीकृति दी है। बेलगांव में सोलहकारण पर्व से ही कार्यक्रम प्रारंभ हो जाते हैं; अत: मुमुक्षुओं के आग्रह को देखते हुए ब्र. सुमतप्रकाशजी ने पूरे कार्यक्रम हेतु स्वीकृति प्रदान की। कार्यक्रम का लाभ लेने हेतु पधारने वाले सभी मुमुक्षु भाई–बहिनों के आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था की जायेगी।

इसके अतिरिक्त डॉ. भारिल्ल द्वारा इन्दौर में, पण्डित अभयजी द्वारा दिल्ली (विश्वासनगर) में एवं पण्डित संजीवजी गोधा द्वारा शिकागो (अमेरिका) में दशलक्षण पर्व मनाना निश्चित हुआ है।

एक तो स्वयं जानते नहीं और जाननेवालों की सुनते नहीं

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर

(नोट : ९ अप्रैल २००८ को प्रात: ६ बजकर २० मिनिट पर साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रसारित प्रवचन में समयसार की चौथी गाथा और उसकी टीका पर हुये अत्यन्त उपयोगी प्रवचन का महत्त्वपूर्ण अंश जैनपथप्रदर्शक के पाठकों के लाभार्थ यहाँ दिया जा रहा है । –सह संपादक)

आत्मानुभव से रहित अज्ञानी जगत की दुर्दशा का चित्र प्रस्तुत करते हुए आचार्य अमृतचन्द्रदेव समयसार की चौथी गाथा की टीका में कहते हैं कि यह लोक संसाररूपी चक्की के पाटों के बीच अनाज के दानों के समान पिस रहा है, मोहरूपी भूत इसे पशुओं के समान जोत रहा है, तृष्णारूपी रोग से यह जल रहा है, विषयभोग की मृगतृष्णा में फंसकर मृग की भांति भवन में भटक रहा है। आश्चर्य की बात तो यह है कि पंचेन्द्रिय विषयों में उलझा हुआ यह अज्ञानी लोक परस्पर आचार्यत्व भी करता है। अज्ञानी लोग विषय–कषाय की चतुराई एक–दूसरे को बताते हैं, सिखाते हैं। पैसा कैसे कमाना, उसे कैसे भोगना आदि बातें एक–दूसरे को बताते हैं; उन्हीं कार्यों को करने की प्रेरणा भी देते हैं।

यदि कदाचित् ऐसे लोग धर्म के क्षेत्र में भी आ जावे तो भी उनकी यह आदत छूटती नहीं है। यहाँ भी वे एक–दूसरे को सिखाते हैं कि चन्दा कैसे इकट्ठा करना और उसका अपनी रुचि के अनुकूल खर्च कैसे करना, कैसे भोगना; उसके दम पर अपना नेतृत्व कैसे कायम करना।

उक्त संदर्भ में मैंने सन् १९७७ ई. में त्याग धर्म की चर्चा करते समय लिखा था –

''समाज में त्याग धर्म के सच्चे स्वरूप का प्रतिपादन करनेवाला विद्वान् बड़ा पण्डित नहीं; बल्कि वह पेशेवर पण्डित बड़ा पण्डित माना जाता है, जो अधिक से अधिक चन्दा करा सके। यह उस देश का, उस समाज का दुर्भाग्य ही समझो, जिस देश व समाज में पण्डित और साधुओं के बड़प्पन का नाप ज्ञान और संयम से न होकर दान के नाम पर पैसा इकट्ठा करने की क्षमता के आधार पर होता है।

इस वृत्ति के कारण समाज और धर्म का सबसे बड़ा नुकसान यह हुआ कि पण्डितों और साधुओं का ध्यान ज्ञान और संयम से हटकर चन्दे पर केन्द्रित हो गया है। जहाँ देखो, धर्म के नाम पर, विशेषकर त्यागधर्म के नाम पर, दान के नाम पर, चन्दा इकट्ठा करने में ही इनकी शक्ति खर्च हो रही है, ज्ञान और ध्यान एक ओर रह गये हैं।

यही कारण है कि उत्तम त्यागधर्म के दिन हम त्याग की चर्चा न करके दान के गीत गाने लगते हैं। दान के भी कहाँ, दानियों के गीत गाने लगते हैं। दानियों के गीत भी कहाँ, एक प्रकार से दानियों के नाम पर यश के लोभियों के गीत ही नहीं गाते; चापलूसी तक करने लगते हैं।

यह सब बड़ा अटपटा लगता है, पर क्या किया जा सकता है–सिवाय इसके कि इससे हम स्वयं बचें और त्यागधर्म का सही स्वरूपस्पष्ट करें; जिनका सद्भाग्य होगा वे समझेंगे, बाकी का जो होना होगा सो होगा।[१]''

१. धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ १२८

त्यागधर्म संबंधी इस प्रकरण की चर्चा स्वामीजी भी भरपूर किया करते थे। वे धर्म के दशलक्षण पुस्तक का उक्त अंश लोगों को बताकर कहते थे कि देखो कैसा सटीक लिखा है।

हाँ, तो अपनी बात यह चल रही थी कि ये लोग धर्म क्षेत्र में आकर भी, धर्म के नाम पर सम्पूर्ण जीवन समर्पित करके भी, आत्मकल्याण की भावना से घर–बार छोड़कर भी, ब्रह्मचर्यादि व्रतों, अणुव्रतों–महाव्रतों को धारण करके भी अपनी पुरानी आदत नहीं छोड़ पाते और अपने को धर्म के नाम पर लौकिक कार्यों में ही उलझाये रखते हैं।

संस्थायें खड़ी करना, नये–नये संस्थानों को खड़ा करना; उनके नाम पर चन्दा इकट्ठा करना, तीर्थों के झगड़ों में उलझना, उनके नाम पर ऐसे काम करना; जो किसी भी रूप में ठीक नहीं माने जा सकते। क्या आप नहीं जानते हैं कि आज कल क्या–क्या नहीं होता है, अदालतों में।

गंभीरता से विचार करने की बात तो यह है कि जिन्होंने आत्मकल्याण की भावना से शादी नहीं की, घर का धंधा–पानी भी छोड़ा, घर छोड़ा; उन्हें तो इसप्रकार के कामों में नहीं उलझना चाहिए। वे तो अपना रहने का स्थान और करने का काम, आध्यात्मिक लाभ की दृष्टि से चुन सकते हैं; क्योंकि वे अपने स्थान और कार्य के चुनाव में पूरी तरह आजाद हैं।

जिन गृहस्थ आत्मार्थी भाइयों को, विद्वानों को अपनी आजीविका स्वयं करनी है; वे तो स्थान और काम चुनने के लिए आजाद नहीं हैं; क्योंकि उन्हें तो जहाँ आजीविका का साधन मिलेगा अर्थात् नौकरी मिलेगी, व्यापार चलेगा; वहाँ रहना होगा। इसीप्रकार काम चुनने में भी वे आजाद नहीं हैं; अपनी–अपनी योग्यतानुसार जहाँ जो काम मिलेगा; वही काम करना होगा। अत: उनके रहने का स्थान और करने का काम उनकी रुचि का द्योतक नहीं है; पर सांसारिक काम छोड़कर आत्मकल्याण करने की भावना वाले गृहत्यागियों का रहने का स्थान और करने का काम उनकी आंतरिक रुचि का द्योतक अवश्य हैं।

उन्हें क्या जरूरत है ऐसे भीड़बाड़ वाले स्थानों पर रहने की, जहाँ न तो आध्यात्मिक वातावरण ही है और न संयम की साधना के योग्य अवसर। जहाँ न्याय–अन्याय पूर्वक भोग–सामग्री जोड़ने और सारी मर्यादायें तोड़कर उन्हें भोगने का ही वातावरण है; ऐसे मुम्बई, कलकत्ता, दिल्ली आदि जैसे स्थानों का चुनाव उनकी किस वृत्ति का परिणाम हो सकता है; इसके बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

मेरी दृष्टि में तो उन्हें रहने के लिए ऐसा शान्त–एकान्त स्थान चुनना चाहिए कि जहाँ उन्हें कुछ सीखने को मिले और यदि वे स्वयं सक्षम विद्वान हैं तो उन्हें कुछ सीखने की भावना रखनेवाले आत्मरुचिवंत श्रोता

मिलें। न तो जहाँ समझानेवाले हों और न समझनेवाले ही, तत्त्वचर्चा करने के लिए बराबरी के आत्मार्थी भी न हों, उनका वहाँ रहना कहाँ तक उचित है ? क्या यह गंभीरता से विचार करने की बात नहीं है ?

प्रवचनसार मैं तो अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि या तो गुणाधिक की संगति में रहना चाहिए या फिर समान गुणवालों की संगति में रहना उचित है। यदि हम उनकी संगति में रहेंगे कि जो निरन्तर आध्यात्मिक शास्त्रों के अध्ययन–मनन में रहते हैं; तो हमें अध्यात्म क्षेत्र में कुछ न कुछ मिलेगा ही; वे बातें भी समझने के लिए मिल सकती हैं कि जिन्हें हम सतत् स्वाध्याय करके भी नहीं समझ सकते। प्रत्येक व्यक्ति को विशिष्ट विद्वानों का सत्समागम सहज संभव नहीं है; अत: उन लोगों को बराबर का अभ्यास करनेवालों की संगति में रहना उचित है।

पंडित टोडरमलजी मोक्षमार्गप्रकाशक में लिखते हैं कि प्रथम तो गहराई से आध्यात्मिक शास्त्रों का स्वयं स्वाध्याय करें। पर जब प्रयत्न करने पर भी जो बात समझ में न आये तो अधिक अभ्यासी गुरुजनों से पूछे, वे न मिले तों साधर्मियों से तत्त्वचर्चा करे; उनसे जो सुनने को मिले उस पर गंभीरता से चिन्तन करे और यह तबतक करता रहे कि जबतक वस्तुस्वरूप पूरी तरह स्पष्ट न हो जाये। इसके अतिरिक्त और जो कुछ भी धर्म के नाम पर किया जाता है, उससे आत्मकल्याण होनेवाला नहीं है।

धर्म के नाम पर, तीर्थक्षेत्र के नाम पर ऐसे वियावान जंगल में जावेंगे कि जहाँ न कोई धर्म की बात सुनने वाला है और न सुनानेवाला; चर्चा करनेवाला भी कोई नहीं। बस मजदूरों को डांटते–फटकारते रहो और चन्दा मांग–मांग कर महल चिनवाते रहो या फिर अदालतों के चक्कर काटते रहो या फिर हजारों बार बोली गई स्तुतियों और पूजनों पर नाच–नाच कर गाते रहो, गवाते रहो, नचाते रहो। आत्मकल्याण के मार्ग में क्या होनेवाला है इन सबसे।

अरे भाई ! स्थान के साथ–साथ काम के बारे में भी गंभीरता सेचुनाव करने की बात है। वे लोग अपने को आध्यात्मिक शास्त्रों को पढ़ने–पढ़ाने के, सुनने–सुनाने के, लिखने–लिखाने के, छपाकर घर–घर पहुँचाने के ज्ञानयज्ञ में क्यों नहीं जोड़ते; जिससे स्व–पर का आत्मकल्याण हो ?

आचार्य अमृतचन्द्र आगे लिखते हैं कि एकत्व–विभक्त आत्मा के बारे में न तो स्वयं कुछ जानता है और न जाननेवाले की सेवा करता, न उनका समागम करता है, उनसे सीखने–समझने की कोशिश भी नहीं करता, यदि आगे होकर भी वे कुछ सुनाये–समझायें तो उनकी बात पर ध्यान ही नहीं देता; इसलिए अनादिकाल से संसार में भटक रहा है।

आचार्य कहते हैं कि जाननेवालों की सेवा नहीं करता। सेवा करने का आशय मात्र उनके पैर दबाना नहीं है, उनके लिए लौकिक अनुकूलतायें जुटाना नहीं है; अपितु उनके प्रतिपादन से लाभ उठाना है। वे आत्मा–परमात्मा के संदर्भ में जो कुछ भी समझाते हैं; उसे गहराई से समझने और श्रद्धापूर्वक स्वीकार करने से है। वे जो कुछ लिखते हैं, उसे पढकर; उसके भाव को आत्मसात करने से है।

अरे भाई ! इसके बिना देशनालब्धि संभव नहीं है।

आचार्य अमृतचन्द्र के जमाने में ऐसी स्थिति रही होगी, तभी तो उन्हें यह सब लिखना पड़ा, आज की स्थिति तो इससे अधिक विकट है। आज के जमाने में तो लोग जिनवाणी को न सुनने देते हैं, न सुनाने देते हैं; न पढ़ने देते हैं, न पढ़ाने देते हैं, न लिखने देते हैं; न छपाने देते हैं और न अपने घर में रखते हैं और न घर–घर पहुंचाने देते हैं।

वर्णीजी कहा करते थे कि पुरुषों में ७२ कलायें होती हैं; पर बुन्देलखण्ड के लोगों में २ कलायें अधिक होती हैं। एक तो वे कुछ जानते नहीं हैं और दूसरे जाननेवालों की मानते नहीं हैं। पर मेरा कहना यह है कि यह बात अकेले बुन्देलखण्ड के लिए ही नहीं है; अपितु सम्पूर्ण जगत की यही स्थिति है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव भी तो यही कह रहे हैं कि यह अज्ञानी जगत प्रथम तो जैन तत्त्वज्ञान की मूल बात अर्थात् आत्मा की बात जानता नहीं है और जाननेवालों की उपासना नहीं करता, उनकी सेवा नहीं करता, उसके सत्समागम में नहीं रहता, उनसे लाभ नहीं उठाता; अपितु उनका विरोध करता है; क्योंकि उसे लगता है कि इनके होने से हम प्रतिष्ठित नहीं हो पाते। अरे भाई ! यदि आत्मकल्याण करना है तो आध्यात्मिक शास्त्रों का गंभीर अध्ययन करो, उनका अध्ययन–अध्यापन करनेवालों की संगति में रहो, आध्यात्मिक शास्त्रों के प्रचार–प्रसार में सहयोग करो। आत्मकल्याण के मार्ग में एकमात्र करने–कराने योग्य तो यही सबकुछ है। इसकी उपेक्षा या विरोध करना तो अनंत संसार का कारण है।

हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे इस प्रतिपादन से उनलोगोंको कोई लाभ होनेवाला नहीं है, जो इस मार्ग पर बहुत आगे बढ़ चुके हैं, पर जो लोग इस मार्ग पर चलने के लिए मन बना रहे हैं, उन्हें तो लाभहोगाही।

यदि उनमें से भी किसी की कषाय कुछ मन्द हो जाय या मंद हो गई हो तो वे लोग भी इसका लाभ उठा सकते हैं; पर बात यह है कि सामाजिक कार्यों से जो कुछ थोड़ी–बहुत प्रतिष्ठा उन्हें प्राप्त हो जाती है, उससे उनकी सबसे बड़ी हानि तो यही होती है कि वर्तमान में जिन लोगों से उन्हें अध्यात्म के क्षेत्र में कुछ सीखने–समझने को मिल सकता है; वे उनकी बात न तो श्रद्धापूर्वक ध्यान से सुन ही सकते हैं और न पढ़ सकते हैं।

जो भी हो, वस्तुस्थिति का सत्यज्ञान तो समाज को होना ही चाहिए। यह तो सुनिश्चित ही है कि हमारे इस प्रतिपादन से कभी न कभी, किसी न किसी को, कुछ न कुछ लाभ तो होगा ही; क्योंकि यह लोक बहुत बढ़ा है और काल अनन्त है। हमारा तो यह पक्का विश्वास है कि यहाँ नहीं तो और कहीं तथा अभी नहीं तो कभी न कभी, किसी न किसी को इस प्रतिपादन का लाभ अवश्य होगा। यदि किसी को लाभ होना ही नहीं होता तो हमें इस तथ्य को स्पष्ट करने का भाव (विकल्प) भी नहीं आता; क्योंकि सत्य का प्रतिपादन निरर्थक नहीं होता।

पण्डित टोडरमलजी का लाभ उस समय के लोगों ने लिया हो, चाहे न लिया हो; पर आज हम तो उनके प्रतिपादन का भरपूर लाभ उठा ही रहे हैं। इसीप्रकार आज कोई लाभ उठाये चाहे न उठाये, पर भविष्य में तो कोई न कोई लाभ उठायेगा ही। ●

17 जून 2013, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

पं.टोडरमलजी से सम्बद्ध विद्वत्संगोष्ठी संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में दिनांक 2 व 3 जून को परिषद के अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में पण्डित टोडरमलजी का 'जैनधर्म के प्रचार-प्रसार में योगदान' विषय पर विद्वत्संगोष्ठी आयोजित की गई।

दिनांक 2 जून को संगोष्ठी के प्रथम सत्र में विद्वत्परिषद् के उपाध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल ने कहा कि दिनांक 2 नवम्बर 1944 को वीर शासन जयंती के दिन कोलकाता में श्रद्धेय श्री गणेशप्रसादजी वर्णी द्वारा विद्वत्परिषद की स्थापना की गई। डॉ. बंसल ने विद्वत्परिषद के उद्देश्य, कार्यक्रम और गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। श्री अंकित शास्त्री ने मंगलाचरण किया। पण्डित अनंतजी विश्वंभर शास्त्री ने पण्डित टोडरमलजी का जीवन परिचय एवं कर्तृत्व को रेखांकित किया। पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद ने मोक्षमार्गप्रकाशक के प्रथम अध्याय के प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। पण्डित रितेशजी शास्त्री ने मोक्षमार्ग प्रकाशक में वर्णित जैनाभास विषय पर प्रकाश डाला। डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने मोक्षमार्ग प्रकाशक और छहढाला का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया।

अन्त में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अध्यक्षीय उद्बोधन एवं पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ संगोष्ठी का प्रथम सत्र समाप्त हुआ। संगोष्ठी का संचालन डॉ. राजेन्द्र कुमारजी बंसल द्वारा किया गया।

दिनांक 3 जून को संगोष्ठी का द्वितीय सत्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मंगलाचरण श्री शुभम जैन ने किया। डॉ. बंसल ने सत्र का संचालन करते हुए कहा कि विद्वत्परिषद का सन् 1947 में सोनगढ में अधिवेशन हुआ था, जिसमें परिषद ने आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी और उनके साथ नवदीक्षित दिगम्बर जैन महानुभावों का अभिनन्दन किया गया था।

संगोष्ठी के प्रथम वक्ता पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा ने 'सम्यक्त्व की विभिन्न परिभाषाओं के समन्वय एवं उनकी एकात्मता' विषय पर प्रकाश डाला। ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना ने मोक्षमार्ग प्रकाशक में उद्धृत किये गये सात भयों पर प्रभावी वक्तव्य दिया। पण्डित नरेन्द्र कुमार जैन जबलपुर ने 'देव-भक्ति का अन्यथा रूप' विषय पर एवं ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' ने 'मोक्षमार्ग प्रकाशक और मैं' विषय पर विचार व्यक्त किये।

अध्यक्षीय उद्बोधन में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के यशस्वी जीवन की अंतिम हृदय-विदारक घटना, उनके द्वारा आजीविका के साथ-साथ विपुल जैन साहित्य के सृजन, टीकाग्रन्थ और उस काल की सामाजिक-राजनैतिक स्थिति आदि पर सप्रमाण प्रकाश डाला और उनके जैसे समर्पित व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने का अनुरोध किया।

अन्त में डॉ. राजेन्द्र बंसल ने कहा कि संगोष्ठी के ये दो सत्र मात्र मंगलाचरण हैं। उन्होंने अध्यक्ष महोदय से अनुरोध किया कि भविष्य में भी शिविरों के मध्य पण्डित टोडरमलजी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर संगोष्ठियाँ आयोजित करवायें, जिसका सभी ने करतल ध्वनि से अनुमोदन किया। विद्वत्परिषद के कोषाध्यक्ष श्री शान्तिकुमारजी पाटील ने सभी विद्वानों एवं समागत बन्धुओं का आभार व्यक्त किया। संगोष्ठी की विषय-वस्तु और पण्डित टोडरमलजी के जीवनवृत्त की जानकारी से श्रोता भावविभोर हुए और संगोष्ठी की सफलता की सराहना की।

डलास (अमेरिका) में अभूतपूर्व शिविर का आयोजन

जैन सोसायटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास के द्वारा दिनांक 30 मई से 2 जून तक त्रिदिवसीय ज्ञान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें प्रात: 9.30 से 11 बजे तक तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन, 11 से 12 बजे तक जैनभूगोल की कक्षा, 3 से 4 बजे तक बारह भावना पर प्रवचन, 4 से 5 बजे तक जैनभूगोल की कक्षा, 5 से 6.30 बजे तक तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन एवं रात्रि में 8 से 9 बजे तक पुन: बारह भावना पर प्रवचन का लाभ मिला। रविवार दिनांक 2 जून को प्रात: सामूहिक पूजन का कार्यक्रम भी रखा गया। सभी प्रवचन एवं कक्षायें पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा ली गयीं। शिविर के समस्त कार्यक्रम श्री अतुलभाई खारा डलास के निर्देशन में संपन्न हुए।

शिविर में लगभग 125 लोगों ने धर्मलाभ लिया। शिविर की सफलता को देखते हुए प्रतिवर्ष शिविर लगाने का निर्णय लिया गया। शिविर के पश्चात् भी चार दिन दोनों समय समयसार एवं नैगमादि नयों पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचनों का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि डलास के पश्चात् शिकागो, मियामी, टोरंटो एवं डेट्रोयट में भी पण्डित संजीवजी के प्रवचनों का लाभ मिलेगा।

प्रकाशन तिथि : 13 जून 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127